संदर्भ-सूची

आधार ग्रंथ-

1. गोस्वामी, इंदिरा (1997), दक्षिणी कामरूप की गाथा (हिंदी अनुवाद- श्रवण कुमार), साहित्य अकादमी, दिल्ली
2. गोस्वामी, इंदिरा (2002), पेजेज स्टेंड विद ब्लड, अंग्रेजी अनुवाद: प्रदीप आचार्य, कथा प्रकाशन, नई दिल्ली
3. गोस्वामी, इंदिरा (2010), नीलकंठी ब्रज (हिंदी अनुवाद- दिनेश द्विवेदी), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
4. गोस्वामी, इंदिरा (2012), द ब्रोन्ज सोर्ड ऑफ थेंगफाखरी तहसीलदार, अंग्रेजी अनुवाद: अरुणि कश्यप, जुबान प्रकाशन, दिल्ली
5. गोस्वामी, इंदिरा (2013), छिन्नमस्ता (हिंदी अनुवाद- पापोरी गोस्वामी), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
6. गोस्वामी, इंदिरा (2015), अहिरण (हिंदी अनुवाद- बुद्धदेव चटर्जी), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
7. सोबती, कृष्णा (2008), समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सोबती, कृष्णा (2010), यारों के यार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. सोबती, कृष्णा (2014), तिन पहाड़, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. सोबती, कृष्णा (2016), ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. सोबती, कृष्णा (2016), जिंदगीनामा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. सोबती, कृष्णा (2016), मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13. सोबती, कृष्णा (2017), गुजरात पकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14. सोबती, कृष्णा (2018), डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

15.सोबती, कृष्णा (2018), दिलोदानिश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

16.सोबती, कृष्णा (2018), सूरजमुखी अँधेरे के, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

17.सोबती, कृष्णा (2019), चन्ना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

असमिया ग्रंथ-

1. भराली, कुमार, हेमंत (संपा.) (2011), मामोनी रायसम गोस्वामीर उपन्यास समग्र, वनलता प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
2. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2011), अहिरण, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
3. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2011), चेनाबेर स्रोत, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
4. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2011), छिन्नमस्तार मानुहटो, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
5. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2011), तेज आरू धूलिरे धूसरित पृष्ठ, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
6. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2015), थेंगफाखरी तहसीलदारेर ताँबार तारोवाल, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
7. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2015), मामरे धरा तारोवाल, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
8. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2018), नीलकंठी ब्रज, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
9. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2019), कईना , स्टूडेंट स्टोर, गुवाहाटी
10. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2019), चिनाकी मरम, स्टूडेंट स्टोर, गुवाहाटी
11. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2022), आधा लेखा दस्ताबेज, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
12. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2022), दँताल हाथिर उने खोवा हौदा, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी
13. रायसम, गोस्वामी, मामोनी (2022), हृदय एक नदीर नाम, चंद्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी

सहायक ग्रंथ-

1. अग्रवाल, रोहिणी (2000), एक नजर कृष्णा सोबती पर, अखिल भारती प्रकाशन, दिल्ली
2. अग्रवाल, रोहिणी (2014), साहित्य की जमीन और स्त्री-मन के उच्छ्वास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. अग्रवाल, रोहिणी (2016), साहित्य का स्त्री स्वर, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
4. अनमिका (2012), मौसम बदलने की आहट, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
5. अनमिका (2012), स्वाधीनता का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. अनामिका (2012), स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
7. अनामिका (2012), स्वाधीनता का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. अमरनाथ (डॉ.) (2018), हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. अरोड़ा, सुधा (2008), आम औरत जिंदा सवाल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
10. अरोड़ा, सुधा (2015), एक औरत की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. एंगल्स, फ्रेडरिक, (1960), परिवार, निजी संपत्ति और राज्यों की उत्पत्ति, ई-पुस्तकालय
12. कालिया, ममता (संपा.) (2020), महिला लेखन के सौ वर्ष, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज
13. कुमार, राधा (2019), स्त्री संघर्ष का इतिहास, अनुवाद: रमाशंकर सिंह 'दिव्यदृष्टि', वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. खेतान, प्रभा (2014), उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
15. गीताश्री(2014), स्त्री आकांक्षा के मानचित्र, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
16. गुप्त, (डॉ.) गणपति चंद्र (2008), महादेवी: नया मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. गुप्ता, रमणिका (2014), स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

18.गोस्वामी, इंदिरा (1999), जिंदगी कोई सौदा नहीं, हिंदी अनुवाद: नीता बनर्जी, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली

19.ग्रीयर, जर्मेन (2005), बधिया स्त्री, हिंदी अनुवाद: मधु बी. जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

20.चक्रवर्ती, उमा, आर्य, साधना (2021), स्त्री अध्ययन: एक परिचय, अनुवाद संपादक- विजय झा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

21.चतुर्वेदी, जगदीश्वर (2018), स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली

22.चौहान, कुमारी, सुभद्रा (2020), श्रेष्ठ कहानियाँ, आनंद प्रकाशन, कोलकाता

23.जायसवाल, (डॉ.) नमिता, स्त्री अस्मिता और समकालीन महिला उपन्यास, आनंद प्रकाशन, कोलकाता

24.जैन, निर्मला (2015), कथा और समय का सच, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

25.जैन, निर्मला (2015), कथा और समय का सच, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

26.जैन, निर्मला (संपा.) (2002), महादेवी संचयिता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

27.तलवार, वीर भारत (2022), रस्साकशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

28.तिवारी, (डॉ.) रामचन्द्र (2015), हिंदी का गद्य-साहित्य, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

29.दुष्यंत (2012), स्त्रियाँ पर्दे से प्रजातंत्र तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

30.देवी, शिवरानी (2020), प्रेमचंद घर में, नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली

31.धर्मवीर, (डॉ.) (संपा.) (2006), सीमंतनी उपदेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

32.पाठक, (प्रो.) आर.सी (2011), भार्गव शब्दकोश (इंग्लिश-हिन्दी), श्री गंगा पुस्तकालय, वाराणसी

33.पाण्डे, मृणाल (2006), जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

34.पाण्डे, मृणाल (2015), परिधि पर स्त्री, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

35.पाण्डे, मृणाल (2015), स्त्री लंबा सफर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

36.पाण्डेय, मैनेजर (2019), शब्द और साधना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

37.प्रमिला, के. पी. (2015), स्त्री अध्ययन की बुनियाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

38.बनजा, के (2013), इकोफेमेनिज़्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

39.बाजपेयी, अशोक (संपा.) (2020), तीसरा साक्ष्य (आठवें दशक में सृजनात्मक आलोचना), संभावना प्रकाशन, हापुड़

40.बोउवार, सिमोन (1992), स्त्री उपेक्षिता, हिंदी रूपांतर: डॉ. प्रभा खेतान, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली

41.भट्टाचार्य, सुकुमारी (1992), प्राचीन भारत समाज और नारी, हिंदी अनुवाद- प्रतिभा अग्रवाल, छविनाथ मिश्र, कैम्प (कम्यूनिकेशन एण्ड मीडिया पीपल्स) प्रकाशन, कलकत्ता

42.भारती, इंदु (2005), आधी आबादी, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली

43.मजुमदार, तनुजा (संपा.) (2011), समकालीन असमिया कहानियाँ स्त्री कलम से, हिंदी अनुवाद- डॉ. संध्या कुमारी सिंह, गाँधी सेंटर फॉर नॉर्थ-ईस्टर्न लैंग्वेजेज़् , बंगाली, संथाली एण्ड हिंदी, प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

44.मधुरेश (2018), हिंदी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद

45.माहेश्वरी, सरला (1998), नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

46.मिल, जे. एस. (2016), स्त्रियों की पराधीनता, हिंदी अनुवाद: प्रगति सक्सेना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

47.मेनन, निवेदिता (2021), नारीवादी निगाह से, अनुवाद: नरेश गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

48.यादव, राजेंद्र, खेतान, प्रभा, दुबे,अभय कुमार, (संपा.) (2019), पितृसत्ता के नए रूप: स्त्री और भूमंडलीकरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

49.यादव, राजेन्द्र (2015), कथा जगत की बागी मुस्लिम औरतें, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

50.यादव, राजेन्द्र (2021), आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

51.रमाबाई (पं.) (2010), हिंदू स्त्री का जीवन, अनुवाद: शंभू जोशी, संवाद प्रकाशन, मेरठ

52.राजकिशोर (संपा.) (2006), नैतिकता के नए सवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

53.राजे, सुमन (2003), हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

54.राठी, गिरिधर (2021), कृष्णा सोबती की जीवनी: दूसरा जीवन, सेतु प्रकाशन, दिल्ली

55.रानी, (डॉ.) रजत, वंदना (2022) (आलोचना एवं संपादन), अस्मितमूलक विमर्श और हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

56.रॉय, अनुपमा (2019), नागरिकता का स्त्री-पक्ष, हिंदी अनुवाद: कमल नयन चौबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

57.वर्मा, महादेवी (2013), मीरा और मीरा: महादेवी वर्मा के मीरा विषयक आख्यान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

58.वर्मा, महादेवी (2017), शृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद

59.व्होरा, आशारानी (1983), भारतीय नारी: दशा, दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

60.शंभुनाथ (प्रधान संपादक) (2019), हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

61.शंभुनाथ (संपा.) (2019), हिंदी साहित्य ज्ञान कोश-खंड 1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

62.शर्मा, नासिरा (2019), औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

63.शुक्ल, रामचन्द्र (), हिंदी साहित्य का इतिहास

64.शुक्ला, आशा (प्रो.), त्रिपाठी, कुसुम (2016), स्त्री अध्ययन: आधारभूत मुद्दे (भाग-1), साहित्य भंडार, इलाहाबाद

65.शुक्ला, आशा (प्रो.), त्रिपाठी, कुसुम (2016), स्त्री अध्ययन: आधारभूत मुद्दे (भाग-2), साहित्य भंडार, इलाहाबाद

66.साव, मनीषा (2018), महादेवी वर्मा का स्त्री विमर्श, आनंद प्रकाशन, कोलकाता

67.साहनी, (डॉ.) भीष्म, मिश्रा, (डॉ.) रामजी, निदारिया, भगवती प्रसाद (संपादक मंडल) (2010), आधुनिक हिंदी उपन्यास-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

68.सिंह, (प्रो.) दिलीप (2011), भाषा का संसार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

69.सिंह, आलोक (2021), पूर्वोत्तर भारत: लोक और समाज, सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

70.सिंह, दूधनाथ (2011), महादेवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

71.सिंह, नमिता (2017), स्त्री प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

72.सिंह, नामवर (1978), इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

73.सिंह, नामवर (2013), बात बात में बात (बीते बारह वर्षों के संवाद), संकलन-सम्पादन: समीक्षा ठाकुर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

74.सिन्हा, सच्चिदानंद (2010), संस्कृति और समाजवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

75.सुजाता (2019), स्त्री निर्मिति, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

76.सुजाता (2021), आलोचना का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

77.सोबती, कृष्णा (2004), हम हशमत-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

78.सोबती, कृष्णा (2009), जैनी मेहरबान सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

79.सोबती, कृष्णा (2012), हम हशमत-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

80.सोबती, कृष्णा (2012), हम हशमत-3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

81.सोबती, कृष्णा (2014), सोबती एक सोहबत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

82.सोबती, कृष्णा (2015), बादलों के घेरे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

83.सोबती, कृष्णा (2015), शब्दों के आलोक में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

84.सोबती, कृष्णा (2017), मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

85.सोबती, कृष्णा (2018), मार्फ़त दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

86.सोबती, कृष्णा (2018), लेखक का जनतंत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

87.सोबती, कृष्णा (2019), हम हशमत-4, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

88.सोबती, कृष्णा (2023), रचना का गर्भगृह, संकलन एवं संपादन: आर. चेतनक्रांति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

अंग्रेजी पुस्तकें -

1. आर्य, (डॉ.) अनीता (2000), इंडियन विमेन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. आहुजा, राम (2009), सोशल प्रॉब्लम्स इन इंडिया, रावत प्रकाशन, जयपुर
3. इगलटन, मैंरी (संपा.) (1986), फेमिनिस्ट लिटरेरी थ्योरी, ब्लैकवेल, यूनाइटेड किंगडम
4. एलडेन, रेव. सिडने (1911), द कचारीज, मैकमिलन प्रकाशन, लंदन, ई-बुक
5. एल्किन, लॉरेन(2017), फ्लैनीयूज (विमेन वाक द सिटी इन पेरिस, न्यूयॉर्क, टोक्यो, वेनिस एण्ड लंदन), विंटेज प्रकाशन, लंदन
6. क्रेग, पैट्रिशिया (1995), मॉडर्न विमेन शॉर्ट स्टोरीज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क
7. गिल्बर्ट, सांद्रा एम, गुबार सुज़ेन (2007), द मैड वुमन इन द ऐटिक, वर्ल्ड व्यू प्रकाशन, दिल्ली
8. गोस्वामी, इंदिरा (2007), पेन एण्ड फ्लेश, बी. आर. पब्लिशिंग, नई दिल्ली
9. गोस्वामी, इंदिरा (2014), रीलिव इंदिरा गोस्वामी: द रिच लेगसी ऑफ हर स्टोरीज, अंग्रेजी अनुवाद: गायत्री भट्टाचार्य, वितस्ता पब्लिशिंग, नई दिल्ली
10. गोस्वामी, इंदिरा (2021), फाइव नॉवेला अबाउट वुमन, अंग्रेजी अनुवाद: दिब्यज्योति शर्मा, नियोगी बुक्स, दिल्ली
11. गोस्वामी, इंदिरा(2007), पेन एण्ड फ्लेश, बी. आर. प्रकाशन, दिल्ली,
12. चंद्रा, सुधीर (2008), इनस्लेव्ड डॉटर्स (कोलोनीयलिज़्म, लॉ एण्ड वीमेंस राइट्स), ऑक्सफोर्ड इंडिया, नई दिल्ली

13.जैक्सन, स्टेवी, जोंस, जैकी (संपा.) (2011), कंटेमपरी फेमिनिस्ट थ्योरी, रावत प्रकाशन, जयपुर

14.जैन जसबीर, (संपा.) (2005), विमेन इन पैट्रीआर्की (क्रॉस-कल्चरल रीडिंग), रावत प्रकाशन, जयपुर

15.थारू, सूसी, ललिता, के. (संपा.) (1993), वुमन राइटिंग इन इंडिया (वॉल्यूम 1), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रकाशन, नई दिल्ली

16.पाठक, नम्रता, शर्मा, दिब्यज्योति (संपा.) (2022), इंदिरा गोस्वामी: मार्जिन्स एण्ड बिऑन्ड, रुतलेज प्रकाशन, न्यूयॉर्क

17.पॉल, कुमार, सुकृता, सेठी, रेखा (संपा.) (2022), कृष्णा सोबती: ए काउन्टर आरकाईव, रुतलेज प्रकाशन, न्यूयॉर्क

18.बरुआ, मंजीत (संपा.) (2007), इंदिरा गोस्वामी: ए कॉम्पाइलेशन ऑन हर लाइफ, वर्क्स एण्ड अचीवमेंट, बी. आर. प्रकाशन, दिल्ली

19.बी. जी तिलक, जन्धयला (संपा.) (2007), विमेन एजुकेशन एण्ड डेवलपमेंट, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

20.बोउवार, सिमोन (2011), द सेकंड सेक्स, विंटेज बुक्स, न्यूयॉर्क, (विंटेज ई बुक्स)

21.बौऊवा, सिमोन (2015), इक्स्ट्रैक्ट फ्रॉम द सेकंड सेक्स, विंटेज फेमिनिज़्म, लंदन

22.मिल्स, सारा (2007), डिसकोर्स, रुतलेज प्रकाशन, न्यूयॉर्क

23.मिश्रा, सरस्वती (2002), स्टेटस ऑफ इंडियन विमेन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

24.मेनन, ऋतु तथा भसीन, कमला (संपा.) (2018), बॉर्डर्स एण्ड बॉउन्ड्रीज: विमेन इन इंडिया पार्टिशन, काली फॉर वुमन, नई दिल्ली

25.लर्नर, गर्डा (1986), द क्रिएशन ऑफ पैट्रिआर्की, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क

26.लेन, रिचर्ड, जे (संपा.) (2016), ग्लोबल लिटरेरी थ्योरी: एन ऐन्थालजी, रुतलेज प्रकाशन, लंदन

27.वुल्फ,वर्जीनिया (2018), ए रूम ऑफ वंस ओन', फिंगर प्रिंट क्लासिक, (प्रकाश बुक्स इंडिया), नई दिल्ली

28.शर्मा, बी. एम (संपा.) (2004), विमेन एण्ड एजुकेशन, कॉमन वेल्थ पब्लिशर, नई दिल्ली

29.सतारावाला, कैकोस, बुरजोर (संकलन) (2002), द सर्च फॉर द सी: द फिक्शनल वर्ल्ड ऑफ इंदिरा गोस्वामी, बी. आर. प्रकाशन, दिल्ली

30.सरकार, सुमित, सरकार, तनिका (संपा.) (2007), विमेन एण्ड सोशल रिफॉर्म इन मॉडर्न इंडिया, वॉल्यूम-1, पर्मानेंट ब्लैक प्रकाशन, रानीखेत

31.सी घोष, सुरेश (2007), हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया, रावत प्रकाशन, जयपुर

32.स्टब, पैट्रिसिया (1981), वुमन एण्ड फिक्शन : फेमिनिज़्म एण्ड द नॉवेल (1880-1920), हार्वेस्ट प्रेस, लंदन

33.हरारी, युवाल नोआह (2011), सेपियंस, विंटेज प्रकाशन, लंदन

34.हेल, डोरोथी. जे (संपा.) (2006), एन ऐन्थालजी ऑफ क्रिटिसिज़्म एण्ड थ्योरी 1900-2000, ब्लैकवेल पब्लिशिंग, लंदन

पत्र तथा पत्रिकाएं:

1. कुमार,आशुतोष, कुमार, संजीव (संपादक), आलोचना, अंक-60, (अप्रैल-जून 2019)
2. चंदन, संजीव (संपादक), निगम, जया (अंक संपादक), स्त्रीकाल, संयुक्त अंक वॉल्यूम-3, अंक 1-2, 2019
3. चंदन, संजीव (संपादक), स्त्रीकाल, वर्ष-4, वॉल्यूम-4, अंक 15, (जनवरी-मार्च 2020)
4. झा, विमल (संपा.), पुस्तक-वार्ता, अंक-73, (नवंबर-दिसम्बर 2017)
5. पाण्डेय, (डॉ.) कृष्ण कुमार (संपादक), समन्वय पूर्वोत्तर, (अप्रैल-जून 2021)
6. भूटिया, (डॉ.) चूकी (संपादक), पूर्वोत्तर प्रभा, प्रवेशांक, (जनवरी-जून 2021)
7. मिश्र, अशोक (संपादक), बहुवचन, अंक-60, (जनवरी-मार्च 2019)

8. राय, विजय (संपादक), लमही, संयुक्तांक, (जनवरी-जून 2021)
9. शंकर (संपादक), परिकथा, वर्ष-18, अंक-102, (मई-जून 2023) (जुलाई-अगस्त 2023)
10. शंभुनाथ (संपादक), वागर्थ, वर्ष-28, अंक-324, नवंबर-2022
11. शंभुनाथ (संपादक), वागर्थ, वर्ष-28, अंक-325, दिसम्बर-2022
12. शंभुनाथ (संपादक), वागर्थ, वर्ष-29, अंक-330, मई-2023
13. शुक्ल, (प्रो.) विद्याशंकर (संपादक), समन्वय पूर्वोत्तर, अंक-14, (जनवरी-मार्च 2012)
14. सिंह, कुमार, राकेश (संपादक), सबद निरंतर, वर्ष-1, अंक-1, (जनवरी-मार्च 2021)
15. हरिनारायण (संपादक), कथादेश, वर्ष-37, अंक-1, मार्च 2019

ब्लॉग्स तथा वेब लिंक:

1. 30 नवंबर 2011, अमिताभ घोष ब्लॉग, http://amitavghosh.com/blog/?p=1923
2. Early Women Writers in Assamese Literature https://www.indianetzone.com/49/early_women_writers_assamese_literature.htm
3. Echoes from the valley: Stories by Assamese women writers https://timesofindia.indiatimes.com/city/guwahati/echoes-from-the-valley-stories-by-assamese-women-writers/articleshow/59104536.cms
4. https://www.downtoearth.org.in/hindistory प्रकृति और स्त्री पर आधिपत्य की आलोचना है इकोफेमेनिज़्म
5. Mamoni Raisom Goswami — the voice of the oppressed who fought for peace in Assam https://theprint.in/theprint-profile/mamoni-raisom-goswami-the-voice-of-the-oppressed-who-fought-for-peace-in-assam/320409/

6. The Eve Writers of Assam https://www.sentinelassam.com/life/the-eve-writers-of-assam-633262
7. अग्रवाल, रोहिणी, 'साहित्य की स्त्री दृष्टि', https://hindisamay.com/content/9890/1/रोहिणी-अग्रवाल-विमर्श-साहित्य-की-स्त्री-दृष्टि.cspx
8. अदिति भारद्वाज का लेख, साहित्य में स्त्री दृष्टि https://thewirehindi.com/242216/women-in-literature
9. अमृता प्रीतम की रचनाओं में है एक 'आज़ाद रूह' की झलक https://hindi.feminisminindia.com/2022/04/06/amrita-pritam-and-her-work-profile-hindi/
10. अरुणि कश्यप का आलेख, 'एन अब्डक्शन दैट चेनज़्ड असमीज लिट्रेचर' https://openthemagazine-com.translate.goog/art-culture/an-abduction-that-changed-assamese-literature/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
11. असम के सत्र, https://tourismcorporation.assam.gov.in/portlet-sub-innerpage/satras-of-assam-0
12. आशापूर्णा देवी: साहसिक और क्रांतिकारी लेखन का सशक्त हस्ताक्षर, https://hindi.feminisminindia.com/2022/10/07/ashapurna-devi-feminist-writer-profile-in-hindi/
13. इंदिरा गोस्वामी: अर्पण कुमार (साक्षात्कार) https://samalochan.com
14. कृष्णा सोबती: लेखन और नारीवाद: रेखा सेठी, https://samalochan.blogspot.com/2019/09/blog-post_20.html

15. कृष्णा सोबती: लेखन तथा नारीवाद: रेखा सेठी
(https://samalochan.blogspot.com/2019/09/blog-post_20.html)
16. ढिल्लन, नवदीप (2013), नैरेटिव स्टेंड इन ब्लड: ए क्रिटिकल एनालीसिस ऑफ इंदिरा गोस्वामीज पेजेज स्टेंड इन ब्लड, लिटरेरी वॉयस,
https://www.researchgate.net/publication/362711355
17. द जर्नी ऑफ ए राइटर: इंदिरा गोस्वामी इन कॉनवेरसेशन विद शुभाजित भद्रा, इंडियन लिट्रेचर, वॉल.- 54, (जनवरी-फरवरी 2010), प्रकाशक- साहित्य अकेडमी,
https://www.jstor.org/stable/23344202
18. पापोरी गोस्वामी का आलेख,
https://navbharattimes.indiatimes.com/opinion/articleshow/11109418.cms
19. प्रियदर्शन का लेख, कृष्णा सोबती: जिन्होंने हिंदी भाषी समाज को बताया कि स्त्री होना क्या होता है, https://www.bbc.com/hindi/india-46997380
20. महादेवी वर्मा की कहानी 'दो फूल'
https://www.femina.in/hindi/sahitya/kahani/do-phool-by-mahadevi-verma-5523-4.html
21. रोहिणी अग्रवाल का लेख, साहित्य की स्त्री दृष्टि
https://www.hindisamay.com/content/
22. वृंदावन की विधवाओं पर 'नैशनल कमीशन फॉर वुमन' की रिपोर्ट,
https://ncwapps.nic.in/pdfReports/WidowsAtVrindavanReport.pdf
23. शाइनो बेबी पॉल का आलेख, Indira Goswami's Giribala-The true door to Swaraj, https://gandhifoundation.files.wordpress.com/2016/12/gw-129.pdf

24.सत्यनाथ, टी. एस. (जुलाई/ अगस्त 2012), रीडिंग थ्रू द 'पेजेज स्टेंड विद ब्लड', वॉल-56, https://www.jstor.org/stable/23345888

25.समालोचन पर अर्पण कुमार का इंदिरा गोस्वामी से साक्षात्कार, https://samalochan.com/इंदिरा-गोस्वामी-अर्पण-कु/

26.सिक्सू, हेलेन (1976), द लाफ़ ऑफ द मेड्यूसा, शिकागो जर्नल, वॉल-1, http://www.jstor.org/stable/3173239

प्रकाशित शोध आलेख			
क्रम	**लेख का शीर्षक**	**पत्रिका**	**अंक/पृष्ठ/लिंक**
1	दक्षिणी कामरूप की गाथा: वैधव्य का संत्रास और मुक्ति की कामना	*भावक* ISSN: 2582-2624	2020, अक्तूबर-दिसंबर, अंक 1, पृष्ठ संख्या: 141-147
2	कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेषणात्मक अध्ययन	*दृष्टिकोण* ISSN: 0975-119X	2021, जनवरी-फरवरी, अंक 13, पृष्ठ संख्या: 1962-1965
3	इंदिरा गोस्वामी की कहानियों में मानवीय संवेदना के विभिन्न आयाम	*लमही* ISSN: 2278-554X	2021, जनवरी-जून संयुक्तांक, पृष्ठ संख्या: 99-103
4	पितृसत्ता: अर्थ, उत्पत्ति एवं व्यापकता	*जनकृति* ISSN: 2454-2725	2021, अप्रैल-मई संयुक्तांक, अंक 72-73, पृष्ठ संख्या: 126-132

दक्षिणी कामरूप की गाथा : वैधव्य का संत्रास और मुक्ति की कामना

—श्रीमती पूजा मिश्र

'दक्षिणी कामरूप की गाथा', 'साहित्य अकादमी' तथा 'ज्ञानपीठ' विभूषित प्रसिद्ध असमिया साहित्यकार इंदिरा गोस्वामी के लोकप्रिय असमिया उपन्यास 'दांताल हाथीर उने खोवा हौदा' का हिंदी अनुवाद है। उपन्यास की समयाविधि 19वीं शताब्दी के आरंभिक काल (1820) से शुरू होकर भारत की ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति (1947-48) के बीच के कालखंड में सिमटी हुई है। वैष्णव सत्रों की पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस उपन्यास में असम की तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्थितियों का भी चित्रण किया गया है। पूर्वोत्तर भारत का समाज मातृसत्तात्मक समाज माना जाता है परंतु इस मातृसत्तात्मक समाज के भीतर एक वैष्णव सत्र में स्त्रियों का जीवन किस प्रकार धार्मिक संस्कारों, रीति–रिवाजों के बंधन में जकड़ा रहता है, इसका बेहद ममस्पर्शी वर्णन उपन्यास में किया गया है। उपन्यास की शुरूआत उस कालखंड से होती है जब लगभग अस्सी प्रतिशत असम अफीमखोरी की चपेट में था। असम का तत्कालीन समाज धार्मिक अंधविश्वासों की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। असम की प्रतिष्ठा के पर्याय वैष्णव सत्रों के भीतर दकियानूसी परंपराओं, मान्यताओं और धार्मिक अंधविश्वासों की रूढ़ियों से त्रस्त, कुढ़ती महिलाओं का जैसा खाका इंदिरा जी अपने उपन्यास द्वारा खींचती हैं उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन घटनाओं से वह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई थीं। इंदिरा जी का पालन–पोषण एक प्रतिष्ठित एवं पारंपरिक वैष्णव परिवार में हुआ था। असम के दक्षिणी कामरूप के अमरंगा में उनका परिवार एक वैष्णव सत्र का मालिक था। एक प्रतिष्ठित और संपन्न वैष्णव सत्र में जन्म लेने के बावजूद इंदिरा जी ने सदैव समाज के उपेक्षित, हाशिए पर रखे प्राणी वर्ग के संत्रास को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त किया। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म 'अदाज्य', 'दांताल हाथीर उने खोवा हौदा' की पृष्ठभूमि पर बनी हुई है। इंदिरा जी के अधिकांश उपन्यास उनके स्वयं के जीवन अनुभवों पर आधारित हैं चाहे वह वृंदावन में राधेस्वामी विधवाओं की दारुण गाथा बयाँ करता उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' हो या फिर अहिरन नदी की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास 'अहिरण'। इन सभी उपन्यासों के आधार में उनके जीवन के भोगे गए और नजदीक से देखे गए यथार्थ की स्पष्ट छाप नजर आती है। इंदिरा जी की रचनाओं में स्त्रियों की मुक्ति के स्पष्ट स्वर सुनाई पड़ते हैं परंतु उन्होंने स्वयं को कभी भी स्त्रीवादी लेखिका घोषित नहीं किया। इंदिरा जी द्वारा रचित यह कालजयी उपन्यास विभिन्न सामाजिक,

Pooja Mishra

कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेष्णात्मक अध्ययन

पूजा मिश्रा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना' स्वतंत्रता पूर्व भारत की खेतिहर संस्कृति के साथ ही शहरी संस्कृति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। वास्तविकता में 'चन्ना' कृष्णा जी का सबसे पहला उपन्यास है जिसकी रचना उन्होंने तीस साल की उम्र में की थी। उपन्यास 'चन्ना' की रचना भारत के विभाजन के बाद की गई थी और इसके प्रकाशन का कार्यभार भारती भंडार, इलाहाबाद को सौंपा गया था। 'नागरी प्रचारणी सभा' के श्री लल्लूलाल जी पांडुलिपि का प्रूफ देखने के साथ ही उपन्यास में आए देशज शब्दों को सुधारने का कार्य कर रहे थे। लल्लू लाल जी के अनुसार हिंदीतर प्रदेश (पंजाब) के देशज शब्दों के प्रयोग से उपन्यास हिंदी भाषी पाठकों के लिए पढ़ने में दुरूह हो जाएगा। उन्होंने शब्दों को लेकर कुछ प्रयोग किए यथा "शाहनी" के स्थान पर "शाहपत्नी", "मसीत" के स्थान पर "मस्जिद", "पैड़ियों" के स्थान पर "सीढ़ियों" इत्यादि। कृष्णा सोबती इस बदलाव से संतुष्ट नहीं थीं। देशज शब्दों के प्रयोग को लेकर उनका तर्क बिल्कुल स्पष्ट था। "मूल लिखित के अनुसार ही इसे छापना चाहिए। कुछ ऐसी शाब्दिक ध्वनियाँ हैं जो उस धरती के भाषाई रूढ़ को सजीव करती हैं।[1] कृष्णा सोबती ने भाषाई परिवर्तन को अस्वीकार करते हुए उपन्यास की छपाई और कागज का खर्च चुका दिया तथा उपन्यास प्रकाशन से वापस ले लिया। सोबती जी के अनुसार 70 के दशक में राजकमल प्रकाशन के आग्रह पर उन्होंने पुनः इस उपन्यास को बॉक्स रूम से बाहर निकाला। "पन्ने पढ़ कर अहसास जरुर हुआ कि यह नौसिखिया लिखित तो है मगर इसमें अच्छे उपन्यास की सभी संभावनाएं हैं। यह भी कि दुबारा लिखने में, इसे सामने रखने में कोई लेखकीय गुड़ नहीं।"[2] इसप्रकार जनवरी, 2019 में "चन्ना" अपने नए कलेवर में प्रकाशित हुआ। साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़ी किसी भी रचना और उसके रचनाकार के लिए परिवेश चित्रण एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है। 'चन्ना' में स्वतंत्रता से पूर्व के भारत की खेतिहर सामाजिक संस्कृति और तत्कालीन शहरी संस्कृति का चित्रण बहुत ही संतुलित रूप में किया गया है। कृष्णा सोबती ऐसे रचनाकारों में से थीं जो अपनी रचनाओं को मात्र कोरी कल्पनाओं के आधार पर नहीं गढ़ती थीं। उनके पात्र आस-पास के परिवेश से निकले जीवंत, स्वतंत्र व्यक्तित्व के प्रतिबिम्ब होते हैं। सोबती जी स्वीकारती हैं कि, "अपनी बात करूँ तो ऐसा कुछ नहीं लिख पाई जो मात्र कल्पना के आधार पर, कल्पना के बल पर बुना-सजा हो, जो किसी स्वप्निल संसार से उभरा हो और जीवन के यथार्थ से दूर हो।[3] उपन्यास 'चन्ना' में धन- वैभव से समृद्ध शाह जी के परिवार का पूरे गाँव भर में मान-सम्मान सोबती जी के ननिहाल की वास्तविकता रही है। शाह-शाहनी की नातिन चन्ना अपनी शिक्षा प्राप्ति के लिए लाहौर के हॉस्टल में रहती है। स्वयं कृष्णा सोबती की शिक्षा-दीक्षा विभाजन से पूर्व लाहौर से हुई थी जहाँ वह हॉस्टल में रहती थीं। 'चन्ना' में उन्होंने अपने हॉस्टल से जुड़े अनुभवों को भी पन्नों पर जीवंत किया है। अविभाजित भारत की बहुत बड़ी शान लाहौर था। कृष्णा सोबती ने लाहौर का वह समय देखा है जब यह कहा जाता था कि जिसने लाहौर नहीं देखा उसने कुछ भी नहीं देखा। सोबती जी ने लाहौर से जुड़े इन संस्मरणों को भी उपन्यास में जोड़ा है। चन्ना को कॉलेज की पढ़ाई के लिए लाहौर भेजा जाता है। धर्मपाल, श्यामा और रामनाथ सबकी शिक्षा-दीक्षा लाहौर से ही संपन्न हुई थी। रामनाथ लाहौर की यादों को संजोते हुए कहते हैं कि, "कुछ भी कहो पाल, कलकत्ते भी रहा हूँ, बम्बई, करांची भी पर लाहौर जैसी जगह कोई नहीं। फिर अनारकली तो...".[4]। चन्ना के बचपन से यौवनावस्था के बीच के वर्षों को समेटता यह उपन्यास बालमनोविज्ञान से स्त्रीमनोविज्ञान तक का फासला तय करता है। चन्ना के जीवन से सम्बद्ध हर छोटे- बड़े पात्रों से जुड़े किस्से भी उपन्यास के फलक को व्यापक बनाते हैं। यह किस्से चाहे चाची महरी की सास से जुड़े हों या फिर सईदा बीबी को भगा कर ले आने वाले आले खां की यादों से जुड़े किस्से हों। शाह जी के विश्वस्त चौधरी और अंशा बीबी, हवेली के घोड़ों की देख-रेख करने वाले नवाब की बाबो से जुड़ी यादें, दरिया पार कराने वाले अल्लाह रक्खा की नूरी से जुड़ी यादें, इन सभी प्रसंगों से उपन्यास मात्र एक पात्र विशेष का उपन्यास न रह कर पंजाब की उस साझी संस्कृति को जी रहे प्रत्येक व्यक्ति का उपन्यास हो जाता है। यह प्रसंग ऐसे हैं जो 'चन्ना' को कृष्णा सोबती के कालजयी और साहित्य अकादमी पुरुस्कृत उपन्यास 'जिंदगीनामा' के समकक्ष खड़ा कर देते हैं। 'चन्ना' की भूमिका में कृष्णा सोबती स्वीकारती हैं कि, "'चन्ना' की यह देर आयद कितनी दुरुस्त है, यह पाठक तय करेंगे; मुझे न बहुत प्रसन्नता है; न असहमति, बस प्रकाशक के कहने पर यह जरुर लगता है कि पाठक मेरी पहली कृति से भी रु-ब-रु हों, जिसका उस समय अप्रकाशित रहना 'जिंदगीनामा' के भी लेखन का कारण बना।[5]

प्रस्तुत आलेख द्वारा निम्नांकित बिंदुओं के अंतर्गत उपन्यास 'चन्ना' के विश्लेष्णात्मक अध्ययन का प्रयास किया जा रहा है।

बाल मनोविज्ञान से स्त्री मनोविज्ञान तक का चित्रण

उपन्यास की प्रमुख पात्र चन्ना विभाजन पूर्व भारत की ग्रामीण संस्कृति तथा तत्कालीन शहरी संस्कृति को जोड़ती हुई एक कड़ी है जिसके जीवन के इर्द- गिर्द उपन्यास की कथा बुनी गई है। उपन्यास का आरंभ ही गाँव के समृद्ध, सुविधा संपन्न शाह जी के परिवार में चन्ना के जन्म से होता है। चन्ना,

Pooja Mishra

कथा–प्रांतर

इंदिरा गोस्वामी की कहानियों में मानवीय संवेदना के विभिन्न आयाम

■ पूजा मिश्रा

असमिया भाषा की प्रतिष्ठित लेखिका इंदिरा गोस्वामी को असम जन स्नेह से "मामोनी बाउदेयी" नाम से भी सम्बोधित करते थे जहाँ बाउदेयी का अर्थ होता है दीदी। इंदिरा गोस्वामी की रचनाओं ने देश और काल की सीमा से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव जाति को उसके भीषण यथार्थ से परिचित कराने के साथ–साथ यह आशा भी जगाई है कि एक दूसरे को जोड़ने वाली तथा एक दूसरे का सुख–दुःख समझने वाली संवेदनाएं पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई हैं। इंदिरा जी के अधिकांश लेखन का आधार उनके जीवन के व्यक्तिगत अनुभव हैं। अपने एक साक्षात्कार में इंदिराजी ने कहा था कि, "मैं अपने जीवन के प्राथमिक अनुभवों से लिखने की कोशिश करती हूँ। मैं केवल इतना भर करती हूँ कि उन्हें अपनी कल्पनाओं के सांचे में ढाल लेती हूँ। "इंदिरा जी द्वारा रचित साहित्य का अनुवाद हिंदी के अतिरिक्त अन्य विविध भाषाओं यथा अंग्रेजी, उड़िया, नेपाली, तेलगु, बंगला बोडो, कन्नड़, तमिल तथा उर्दू इत्यादि में भी हुआ है। गोस्वामी जी की रचनाओं को पढ़कर मन–मष्तिष्क में जो छवि उभरती है, वह ऐसी संवेदनशील किन्तु सशक्त महिला की है, जिसकी हर प्रतिकूल परिस्थिति में भी जीवन के प्रति अटूट आस्था है।

इंदिरा जी की कहानियों में संपूर्ण असम अंचल के स्पंदन का अनुभव किया जा सकता है तथा इन कहानियों द्वारा असम के बहुसांस्कृतिक समाज तथा इतिहास का स्पष्ट विवरण प्राप्त किया जा सकता है। इंदिरा जी ने बहुत छोटी उम्र से ही लेखन कार्य शुरू कर दिया था। इंदिरा जी की प्रारंभिक कहानियों का संरक्षण नहीं हो पाया है। इंदिरा जी कहती थीं कि उनकी कहानियों की संख्या 150 से अधिक होगी। उनका प्रथम कहानी संग्रह "चिनाकी मरम" मात्र तेरह वर्ष की आयु में प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात इंदिरा जी के प्रकाशित कहानी संग्रह निम्नवत हैं:–

"कईना" (1962), "हृदय एक टानदीर नाम" (1988), "निर्वाचित गल्पो" (1988), "प्रिय गल्पो" (1999)

इंदिरा जी की अधिकांश लोकप्रिय कहानियों के मूल में पीड़ा और वेदना की हृदयस्पर्शी अनुभूति है, परंतु इस अनुभूति की परिणति निराशा या अवसाद में नहीं होती बल्कि यह कहानियाँ सामाजिक कुरीतियों, खोखली मान्यताओं, जो समाज में स्त्रियों के शोषण का मूल कारण हैं, पर एक व्यंग्य करती हुई प्रतीत होती हैं। इंदिरा गोस्वामी की "संस्कार", "मोहभंग", "एक अविस्मरणीय यात्रा", "देवीपीठ का रक्त", "परसू का कुऑ" इत्यादि कहानियों में जहाँ एक ओर रूढ़िगत मान्यताएँ, मर्मभेदी गरीबी, रास्ते से भटके नौजवानों

इंदिरा गोस्वामी

Pooja Mishra

'जनकृति' बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका (विशेषज्ञ समीक्षित)
JANKRITI (Multidisciplinary International Magazine) (Peer-Reviewed) ISSN: 2454-2725

पितृसत्ता: अर्थ, उत्पत्ति एवं व्यापकता

*पूजा मिश्रा

सारांश:

प्रस्तुत आलेख द्वारा वैश्विक स्तर पर स्त्री की दोयम स्थिति के आधारभूत और महत्वपूर्ण कारक के रूप में पितृसत्ता को परिभाषित किया गया है। पितृसत्ता को मूलरूप से समझने के लिए इसके उत्पत्ति संबंधित मतों पर ध्यान देना आवश्यक है अतः पितृसत्ता को सार्वभौमिक और सार्वकालिक घोषित करने वाले विभिन्न मतों के साथ ही मानवविज्ञानी, सैली स्लोकम, इतिहासकार गर्डा लर्नर तथा मार्क्सवादी फ्रेडरिक एंगल्स इत्यादि द्वारा इन मतों का खंडन करने वाले तर्क भी प्रस्तुत किए गए हैं जिससे यह सत्यापित हो सके कि पितृसत्ता, सार्वभौमिक और सार्वकालिक नहीं है। पितृसत्ता की व्यापकता का अनुभव विश्व की लगभग प्रत्येक संस्कृति और समाज में किया जा सकता है परंतु यदि सम्मिलित प्रयास किए जाएं तो निश्चय ही पितृसत्ता और मातृसत्ता से परे एक समतामूलक समाज की स्थापना की जा सकती है।

बीज शब्द:

पितृसत्ता, मातृसत्ता, स्त्रीविमर्श, सामाजिक संरचना, शिकारी पुरुष, आदिम समाज

भूमिका:

पितृसत्ता अंग्रेजी के शब्द 'पैट्रिआर्की' का हिंदी अनुवाद है तथा 'पैटर' और 'आर्के' शब्दों से मिल कर बना है अर्थात 'पिता का शासन'। पितृसत्ता एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जिसमें परिवार की संपूर्ण बागडोर घर के वृद्ध अथवा प्रभावशाली पुरुष के हाथ में होती है। परिवार में वंश पिता के पूर्वजों के अनुसार चलता है। ऐसी पारिवारिक व्यवस्था में सत्ता का हस्तानांतरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक पुरुष से दूसरे पुरुष के हाथों होता रहता है। भारत ही नहीं वरन विश्व के अधिकांश भागों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का ही अनुसरण किया जाता है। स्त्रीवादी विशेषज्ञों ने स्त्री की सामाजिक दोयम स्थिति का मूलभूत कारण पितृसत्ता को ही घोषित किया है। केट मिलेट ने अपनी पुस्तक 'सेक्सुअल पॉलिटिक्स' में स्त्री के ऊपर पुरुष वर्चस्व की स्थिति के लिए 'पितृसत्ता' शब्द का प्रयोग किया था। विभिन्न स्त्रीवादी विद्वानों द्वारा पितृसत्ता व्यवस्था की व्याख्या की गई है। प्रसिद्ध समाज शास्त्री सिल्विया वाल्बे के अनुसार "पितृसत्ता सामाजिक संरचना की एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पुरुष महिला पर अपना प्रभुत्व जमाता है, उसका दमन करता है और शोषण करता है।"[1] स्त्रीविमर्श के विभिन्न संप्रदायों में से एक 'उग्र स्त्रीवाद' पितृसत्ता की जिस प्रकार से व्याख्या करता है , वह अनेक स्त्रीवादी विद्वानों को संतुष्ट नही करती है। 'उग्र स्त्रीवाद' स्त्रियों की प्रजनन क्षमता को उसकी अधीनता के मुख्य कारकों में गिनता है। 'उग्र स्त्रीवाद' यह मानता है कि यदि स्त्री प्रजनन की अनिवार्यता को हटा दिया जाए तो पुरुषों पर निर्भर रहने की उनकी विवशता स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। शुल्मिथ फायरस्टोन अपनी पुस्तक 'द डायलेक्टिक ऑफ़ सेक्स' द्वारा इसी विचारधारा का समर्थन करती हैं परंतु अन्य स्त्रीवादी विद्वान मानते हैं कि हमारा समाज जाति, जेंडर, नस्ल, वर्ग और धर्म इत्यादि के आधार पर बंटा हुआ है अतः पितृसत्ता के अनुभव प्रत्येक स्त्री के लिए एक से ही नहीं हैं। उदाहरणस्वरूप देखा जा सकता है कि निम्न जातियों की स्त्री का शोषण मात्र पितृसत्ता ही नहीं वरन जाति व्यवस्था द्वारा भी किया जाता है। वह पुरुषों

[1] फरहत खान एवं डॉ. अरुणा सेठी द्वारा लिखित आलेख, भारत में लिंग असमानता, Indian Streams Research Journal

Pooja Mishra

शोध-संबंधी संगोष्ठी			
क्रम	**लेख का शीर्षक**	**संस्थान**	**तिथि/वर्ष**
1	स्त्री लेखन के संदर्भ में हिन्दी साहित्य का इतिहास	राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश	01-02 मार्च 2022
2	प्रेमचंद के उपन्यास "प्रतिज्ञा" और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास "दक्षिणी कामरूप की गाथा" में वैधव्य-प्रश्न	*भारतीय भाषा परिषद एवं सांस्कृतिक पूनर्निर्माण मिशन, कोलकाता*	*30 जुलाई, 2022*

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों माध्यम में

(In Blended Mode)

01-02 मार्च, 2022

हिन्दी साहित्य का इतिहास: नए प्रश्न, वर्तमान सन्दर्भ

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो. /डॉ. /श्री /श्रीमती /सुश्री पूजा मिश्रा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग पदनाम /संस्था प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता ने राजीव गाँधी विश्वविद्यालय द्वारा मिश्रित माध्यम में सम्पन्न (In Blended Mode) दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्रवाचक के रूप में भाग लिया तथा 'स्त्री लेखन के संदर्भ में हिन्दी साहित्य का इतिहास' विषय पर व्याख्यान /शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. अभिषेक कुमार यादव संगोष्ठी संयोजक, हिंदी विभाग राजीव गाँधी विश्वविद्यालय	डॉ. श्याम शंकर सिंह अध्यक्ष, हिन्दी विभाग राजीव गाँधी विश्वविद्यालय	प्रो. ओकेन लेगो भाषा संकायाध्यक्ष राजीव गाँधी विश्वविद्यालय	प्रो. साकेत कुशवाहा कुलपति राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

Pooja Mishra

भारतीय भाषा परिषद

प्रेमचंद जयंती

के अवसर पर आयोजित

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 30 जुलाई 2022

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ./श्री/सुश्री/श्रीमती पूजा मिश्रा

शिक्षण संस्थान प्रेसिडेंसी विश्व विद्यालय

आपने **प्रेमचंद: विमर्शों के बीच पुल** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्याख्यान दिया / आलेख-पाठ / प्रतिभागिता की। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

विषय : प्रेमचंद के उपन्यास "प्रतिज्ञा" और इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास "दक्षिणी कामरूप की गाथा" में वैधव्य-प्रश्न

डॉ. कुसुम खेमानी
अध्यक्ष, भारतीय भाषा परिषद

डॉ. शंभुनाथ
निदेशक, भारतीय भाषा परिषद

डॉ. राजेश मिश्र
महासचिव, सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन

Pooja Mishra